Sociology

Class:- XIth Date:- 20/04/2020

By:- Dr. Shyamanand Choudhary, Guest Teacher
Marwari college, Darbhanga, 9507941619

सामाजिक समूह

साधारणतया बोल-चाल की भाषा में समूह का अर्थ कुछ व्यक्तियों का एकत्रित रूप समझा जाता है। किंतु समाजशास्त्र में व्यक्तियों के प्रत्येक एकत्रित रूप को समूह नही कहा जा सकता है। Sociology में समूह का अध्ययन अन्त: निर्भरता तथा अन्त: सम्बन्ध के रूप में किया जाता है। समाजशास्त्र में ऐसी एक भी परिभाषा नही मिलती जिसमें समूह के निर्माण के लिए सभी आवश्यक तत्वों का वर्णन हो। अत: विभिन्न परिभाषाओं तथा विभिन्न समाजशास्त्रियों के विचारों के आधार पर Social group एवं उसके आवश्यक तत्वों का वर्णन किया जा सकता है। Edward Sapir के अनुसार, समूह के निर्माण के लिए सामान्य हितों का रहना आवश्यक है। उन्हीं के शब्दों में :— "Any group is constituted by the fact that, there is some enterest which hold its members together"

अर्थात (समूह का निर्माण केवल इस तथ्य पर आधारित है कि कोई न कोई विशेष स्वार्थ उस समूह के सदस्यों को एकता के सूत्र में बाँधे रखता है।)

Lewin के शब्दों में "The essence of group is not the similarity or dissimilarity of its members, but their enterdependence"

अर्थात (समूह का सम्बन्ध व्यक्तियों की समानता या असमानता नही है बल्कि उनकी अन्त: निर्भरता है।)

MacIver & Page ने समूह को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "By group we mean any collection of human beings, who are brought into social relationship with one another"

अर्थात (समूह से हमारा तात्पर्य व्यक्तियों के किसी भी ऐसे संग्रह से है जो सामाजिक सम्बन्धों के कारण एक-दूसरे के समीप हो।)

MacIver के अनुसार Social group के निर्माण के प्रमुख तत्व Social relationship है।

जब तक व्यक्तियों में पारस्परिक जागरूकता एवं पारस्परिक निर्भरता की भावना नही होगी तब तक group का निर्माण नही हो सकता है।

Ogburn & Nimcoff ने भी Social group को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "Whenever two or more Individuals come together & infeunce each other they may be said to constitute

a Social group."

अर्थात (जब कभी दो या दो से अधिक व्यक्ति एकत्रित होकर एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं, तब वे एक समूह का निर्माण करते हैं।)

इसका मतलब कि समूह के कुछ सदस्यों में पारस्परिक जागरूकता एवं पारस्परिक सहयोग की भावना रहती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि कुछ व्यक्तियों का एक जगह पर एकत्रित हो जाना ही समूह निर्माण के लिए आवश्यक शर्त नहीं है। अतः उपरलिखित परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों का संगठन है। उनलोगों में परस्पर सहयोग एवं परस्पर सम्बन्ध की भावना रहती है। साथ ही व्यक्तियों में सामान्य हित का होना भी आवश्यक है। जिसके कारण वे समूह का निर्माण करते हैं। समूह के सम्बन्ध में जैसा कि New Comb ने बतलाया है, एक समूह के सदस्य सामाजिक जीवन के कुछ पहलुओं के सम्बन्ध में एक ही आदर्शों और मूल्यों का पालन करते हैं।

समूह के निर्माण का आधार एक नहीं बल्कि भिन्न-भिन्न आधारों पर समूह का निर्माण होता है। अतः भिन्न-भिन्न आधारों पर Sociologist ने Social groups का भिन्न-भिन्न वर्गीकरण (Classification) प्रस्तुत किया है।

(1) Ward & Giddings ने इच्छा एवं अनिवार्यता के आधार पर सामाजिक समूह का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, जो ऐच्छिक समूह (voluntary group) तथा अनिवार्य समूह (Involuntary group), दो भागों में बाँटा है।

ऐच्छिक समूह → उस समूह को कहा जाता है जिसकी सदस्यता व्यक्तियों की व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर करती है। जैसे:- धार्मिक संघ, व्यवसायिक संघ, क्लब, राजनीतिक पार्टी आदि। इसके विपरीत

अनिवार्य समूह → उस समूह को कहा जाता है जिसकी सदस्यता व्यक्तियों की व्यक्तिगत इच्छा पर नहीं होती है, बल्कि अनिवार्य रूप से हमें उसका सदस्य बनना पड़ता है। जैसे:- जाति, परिवार आदि।

(2) W. G. Summner ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Folkways' में Social groups को दो भागों में बाँटा है:- In group, out group। कोई भी group न तो अपने आप में In group होता है और न ही out group. हमारी आत्मीयता ही यह निश्चित कर सकती है कि कौन समूह हमारे लिए In group है और कौन out group. जिस समूह के साथ दूसरे समूह की तुलना में आत्मीयता अधिक रहती है और जिस समूह के सदस्यों के साथ हमें समूह की भावना अधिक रहती है वे ही समूह हमारे लिए In group बन जाता है। इसके विपरीत जिस समूह

Scanned with CamScanner

के साथ हम समूह की भावना का अभाव रहता है तथा आत्मीयता की भावना नहीं रहती है out group बन जाता है। अतः यह कहना अनुचित नहीं प्रतीत होता है कि ये समूहों में तुलना के आधार पर ही यह बतलाया जा सकता है कि कौन समूह हमारे लिए In group है और कौन समूह out group है। एक स्थिति में अन्य समूहों से तुलना करने पर जो group, out group हो सकता है वही समूह दूसरी परिस्थिति में In group हो सकता है। उदाहरण स्वरूप Year के रूप में देखा जाए तो XI year Sociology के students के लिए X year के Sociology के students out-group के सदस्य हो सकते हैं। वहीं X year Sociology के students Intermediate के students की तुलना में हमारे लिए In group के उदाहरण हो सकते हैं।

(3) E. A. Ross ने सामाजिक समूह को तीन भागों में बाँटा है:-

A. स्थानीय समूह (Local group)

B. सादृश्य समूह (Likeness ,,) तथा

C. स्वार्थ समूह (Interest ,,)

Local group → उन समूहों को कहा जाता है जिसके निर्माण का आधार निश्चित क्षेत्र में निवास करना होता है। अर्थात् एक निश्चित भू-भाग में बसने वाले व्यक्तियों के समूह को स्थानीय समूह कहा जा सकता है। पड़ोस, ग्राम तथा शहर ऐसे समूह के उदाहरण हैं। जिस समूह के आधार रंग, लिंग, भाषा एवं धर्म इत्यादि तत्व होते हैं उन समूह को Likeness group (सादृश्य) कहा जाता है। एक सदृश्य दिखाई देने वाले सदस्यों के संगठन से इस तरह के समूह का निर्माण होता है। ये जनजाति, कबीला, राष्ट्र इत्यादि ऐसे समूह के उदाहरण हैं। जिस समूह के निर्माण का आधार एक विशेष स्वार्थ हो उसे Interest group कहा जा सकता है। एक समान स्वार्थवाले अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए जब कोई संगठन का निर्माण करते हैं तब इस प्रकार के समूह का जन्म होता है। छात्र संघ, शिक्षक संघ, कर्मचारी संघ इत्यादि इसके उदाहरण हैं।

(4) समूह का एक महत्वपूर्ण वर्गीकरण Primary & Secondary group के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। C. H. Cooley सर्वप्रथम Sociologist हैं जिन्होंने Primary group की अवधारणा 1909 ई० में प्रस्तुत किया। उन्होंने Secondary group की अवधारणा का प्रयोग पहले नहीं किया था। कुछ समाजशास्त्रियों ने Primary group से भिन्न विशेषता रखने वाले समूह को Secondary group नाम दिया था, जिसे बाद में Cooley ने भी स्वीकार किया। Primary group उन समूहों को कहा जाता है जिसके सदस्यों

में आत्मीयता की भावना, हम समूह की भावना, संवेगात्मक लगाव (emotional attachment) तथा प्रत्यक्ष एवं व्यक्तिगत सहयोग की भावना है। ऐसे समूह का आकार तुलनात्मक रुप में छोटा होता है तथा तुलनात्मक रुप में स्थिरता अधिक पायी जाती है। Primary group को परिभाषित करते हुए Cooley ने स्वयं लिखा है :- "By primary groups I mean those characterised by intimate face to face association & co - operation."

इस परिभाषा से यह भी पता चलता है कि Cooley ने प्राथमिक समूह के निर्माण के लिए आत्मीयता, आमने-सामने का सम्बन्ध, एवं सहयोग ये तीन आवश्यक शर्त हैं। जहाँ तक आत्मीयता का प्रश्न है, सभी समाजशास्त्रियों ने स्वीकार किया है कि Primary group के निर्माण के लिए group में अधिक आत्मीयता की भावना पाया जाना। किंतु जहाँ तक आमने - सामने के सम्बन्ध का प्रश्न है यह Ellsworth faris के अनुसार Primary group के लिए आवश्यक शर्त नहीं है। उन्होंने कहा है कि कुछ परिस्थितियों में आमने - सामने का सम्बन्ध रहने पर भी Primary group का निर्माण नहीं हो सकता है। तथा दूसरी ओर आमने-सामने का सम्बन्ध न रहनेवाली Primary group भंग नहीं होता है। उदाहरणार्थ- Railway platform या court में व्यक्तियों से आमने-सामने का सम्बन्ध रहता है फिर भी Primary group का निर्माण नहीं होता है, साथ ही विदेश में रहने वाले व्यक्ति का अपने देश में रहने वाले परिवार के लोगों से सम्बन्ध टूट नहीं जाता है यद्यपि परिवार के सदस्यों के साथ आमने - सामने के सम्बन्ध के रुप में बंधे नहीं रहते है। परिवार, पड़ोस एवं बच्चों का क्रीड़ा समूह, Cooley के अनुसार Primary group के सार्वभौमिक उदाहरण हैं। इसके विपरीत Secondary group उन समूहों को कहा जाता है जिसके सदस्यों में आत्मीयता की भावना की कमी रहती है, जिसका आकार तुलनात्मक रुप से बड़ा होता है तथा स्थिरता में भी कमी रहती है। ऐसे समूह में शर्त पर आधारित सम्बन्ध (contractual Relation) पाया जाता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि Primary group से भिन्न विशेषता रखने वाले समूह Secondary group है। इस बात की पुष्टि करते हुए Robert Bierstedt ने भी लिखा है कि "Secondary group . . . are . . all those that a not Primary." Political Party, club, State, Student union इत्यादि Secondary groups के उदाहरण कहे जा सकते हैं।

S. N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U